बनारस के मठ-मंदिर

डॉ. प्रमोद गिरि*

काशी के धार्मिक और सांस्कृतिक महत्त्व ने प्राचीन काल में विभिन्न धर्माचार्यों एवं मनीषियों को काशी यात्रा एवं अध्ययन चिंतन के लिये प्रेरित किया। बुद्ध तथा पार्श्वनाथ एवं महावीर तीर्थङ्करों के अतिरिक्त मध्ययुगीन भक्तिमार्गी और निर्गुण-सगुण उपासक भी काशी की धरती से सम्बन्धित थे। आदि शंकराचार्य, रामानुज, मध्वाचार्य, कुमारस्वामी, तैलंगस्वामी, संत एकनाथ, दादू आदि सन्तों के आगमन का भी सन्दर्भ प्राप्त होता है। इन सन्तों ने अपने-अपने मतों से सम्बन्धित मठों एवं अखाड़ों की स्थापना की जिनकी एक लम्बी शृंखला गंगा तट पर एक छोर से दूसरे छोर तक तथा इनसे लगे मुहल्लों में स्थित है। ये मठ धार्मिक और सांस्कृतिक गतिविधियों के साथ ही इतिहास, स्थापत्य एवं कलाकृतियों की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण हैं। देश के एक भाग को दूसरे भाग से जोड़ने तथा उनकी संस्कृति से परिचित कराने के कार्य में भी इन मठों का महत्त्वपूर्ण योगदान है। इन मठों से प्राप्त दस्तावेजों से काशी के इतिहास पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है जिसमें मुगल फरमानों का विशेष योगदान है।

हिन्दू समाज में मठों की स्थापना में आदि शंकराचार्य का विशिष्ट योगदान है जिन्होंने वैदिक धर्म की पुनर्स्थापना के लिये भारत के चार कोनों में चार मठों की स्थापना कर सम्पूर्ण भारत को एक सांस्कृतिक सूत्र में पिरोने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया। आदि शंकराचार्य की भाँति आचार्य रामानुज और मध्वाचार्य द्वारा भी मठों की स्थापना के सन्दर्भ-प्राप्त होते हैं।[1] सम्पूर्ण भारत में इन महापुरुषों द्वारा स्थापित मठों की एक बड़ी और संगठित कड़ी प्राप्त होती है जिसकी एक लम्बी शृंखला काशी में विद्यमान है। इन महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों के बाद कालान्तर में मठों का प्रचलन गोरखनाथ संप्रदाय के नाथपन्थी सिद्ध योगियों और जंगमों के बीच हुआ। इसी प्रकार कबीरदास, स्वामीचरणदास, रामानन्द तथा सन्त दादू आदि ने भी अपने-अपने संप्रदायों की स्थापनाकर मठों की स्थापना की।

साहित्य में मठ को संन्यासियों का आवास, साधकों की कुटिया, विहार, शिक्षालय, विद्यामंदिर, महाविद्यालय, ज्ञानपीठ, देवालय तथा मंदिर बताया गया है।[2] किन्तु वर्तमान में सामान्यतया मठ का अर्थ एक ऐसे स्थल के रूप में लिया जाता है जहाँ किसी एक सम्प्रदाय के साधु-संन्यासी, सन्त-महात्मा निवास करते हैं और मठाधिपति के अनुशासन में रहकर संप्रदाय विशेष के विचारों का प्रचार-प्रसार करते हैं। संन्यासियों द्वारा धर्म प्रचार तथा नैतिकता के प्रचार-प्रसार की आवश्यकता ने उन्हें देवालयों को भी अपना आश्रय बनाने का अवसर दिया। कालान्तर में इन्हीं देवालयों और आवास के संयुक्त रूप से मठों की स्थापना हुई। यही कारण है कि मन्दिर और मठों का घनिष्ठ संबंध देखने को मिलता है। धर्मशास्त्र के उद्धरणों में मन्दिर और मठ दोनों को एक दूसरे का पूरक माना गया है। वर्तमान में काशी के कई मठ, मठ और मन्दिर दोनों नामों से जाने जाते हैं। उदाहरणार्थ– अन्नपूर्णा मठ-मन्दिर, तिलभाण्डेश्वर मठ-मन्दिर, संकठा मठ-मन्दिर, ठाकुर जितेन्द्रनाथ मठ-मन्दिर इत्यादि। कबीर मठ को कबीरकीर्ति मन्दिर नाम से जाना जाता है। प्रायः मठों में मठ के संस्थापक और आराध्यदेव का मन्दिर होता है। मन्दिर जहाँ धर्म का व्यावहारिक पक्ष हैं वहीं मठ सैद्धान्तिक पक्ष को प्रस्तुत करते हैं।

काशी में मुख्यतः दो संप्रदायों से सम्बन्धित मठों के उदाहरण मिलते हैं–एक शैव तथा दूसरा वैष्णव। शैव मठ संन्यासियों के आधार पर पुनः कई मठों में विभाजित हैं; उदाहरणार्थ कनफटा शैव मठ, अघोरपंथी शैव मठ, वीर शैव या लिंगायत मठ। कनफटा शैव मठ के प्रवर्तक गुरुगोरखनाथ थे जिन्होंने दसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में

* बी. 37/164, गिरि नगर कॉलोनी, बिरदोपुर, वाराणसी।

इसका पुनर्गठन किया। काशी में नाथ संप्रदाय मठ का सुन्दर उदाहरण गोरखटीला मठ है जिसके आराध्य शिव हैं। अघोरपंथी शैव मठ के उदाहरण के रूप में "कीनाराम का स्थल" प्रसिद्ध है। वीर शैव या लिंगायत मठ शिव उपासना से सम्बन्धित है। इस सम्प्रदाय के लोग शिवलिंग को चाँदी या सोने में मढ़वा कर गले में धारण करते हैं। इस सम्प्रदाय का काशी का सबसे प्राचीन मठ जंगमबाड़ी मठ है। शैव मठों के समान वैष्णव मठ भी विभिन्न सम्प्रदायों में विभक्त हैं। वैष्णव मठ को "स्थान" और आश्रम भी कहते हैं। काशी में लगभग 108 मठ पाये जाते हैं जिनमें दसनामियों के 71 शैव मठ, 4 अन्य शैव मठ, 8 वैष्णव मठ, 7 सन्त संप्रदाय के मठ, 6 अन्य संप्रदाय एवं 4 शैव अखाड़े तथा 4 वैष्णव अखाड़े हैं। वर्तमान में इनमें से कुछ ही मठ के रूप में ज्ञात हैं, शेष अपना अस्तित्व खोकर नवीन भवनों में परिवर्तित हो गये हैं। विभिन्न सम्प्रदाय के ये मठ काशी में धार्मिक सौहार्द के जीवन्त उदाहरण हैं। कुछ विशिष्ट मठों एवं मन्दिरों के स्थापत्य, चित्रों एवं मूर्तियों की चर्चा यहाँ हमारा अभीष्ट है :

स्थापत्य

स्थापत्य की दृष्टि से प्रायः काशी के सभी मठों में एक समानता दिखाई देती है। दो मंजिलों वाले मठों में भूतल के समान ही ऊपर की मंजिल भी निर्मित है। सामान्यतः भवनों में प्रवेश-द्वार को पूर्व दिशा में ठीक माना जाता है किन्तु मठों के प्रवेश द्वार प्रायः उत्तर दिशा में हैं। प्रवेश-द्वार के बाद प्रांगण स्थित होता है जिसमें मठ के सम्प्रदाय से संबन्धित मंदिर, समाधि, पादुकास्थल और कूप स्थित होते हैं। काशी में एक से सात प्रांगण वाले मठ पाये जाते हैं। प्रांगण से लगे स्तम्भयुक्त दालान और दालान के पार्श्व की भित्ति में ताख एवं ताख के दोनों ओर पत्थर की छोटी-छोटी घुड़िया (ब्रैकेट) स्थित होती हैं। ये घुड़िया संन्यासियों के वस्त्र एवं दण्ड रखने के प्रयोग में आती हैं। दालान के पश्चात् संन्यासियों के निवास के लिये छोटे-छोटे कक्ष स्थित होते हैं। कहीं-कहीं मठों में धूनी स्थल भी दालानों में पाये जाते हैं जिसका एक उदाहरण काशी का गोरखटीला मठ है। ये दालान संन्यासियों के विश्राम एवं भोजन ग्रहण करने के स्थल के रूप में भी प्रयुक्त होते हैं। कुछ मठों में दालान में कुछ दूरी तक ऊँचा चबूतरेनुमा स्थान होता है जिस पर मठों से संबंधित विशेष व्यक्ति भोजन ग्रहण करते हैं। दालानों के काष्ठ एवं पाषाण निर्मित स्तम्भ चौकोर, गोल एवं पहलदार होते हैं। दालानों की छत सादी एवं चित्रित दोनों प्रकार की पायी जाती है। चित्रित दालान का सुन्दर उदाहरण तिलभाण्डेश्वर मठ है।

संन्यासियों के कक्ष के प्रवेश-द्वार बहुत कम ऊँचाई वाले होते हैं। मठ के भीतरी भाग में स्थित महन्तों के कक्ष इन कक्षों की अपेक्षा बड़े एवं सुसज्जित होते हैं जिनमें कीमती झाड़-फानूस आदि की सज्जा होती है। सज्जा की दृष्टि से बिहारीपुरी मठ एवं अन्नपूर्णा मठ मंदिर उल्लेखनीय हैं।

पाषाण उकेरन की दृष्टि से काशी के मठ-मंदिरों का विशेष स्थान है। मठों के पाषाण अलंकरण में मुख्य रूप से राजस्थान और बंगाल के पाषाण अलंकरण की झलक मिलती है। मठों के प्रवेश-द्वार, स्तम्भ, घुड़िया (ब्रैकेट), धरन अलंकरण की दृष्टि से उल्लेखनीय हैं।

प्रवेश द्वार- मठों के प्रवेश-द्वार अलंकृत होते हैं जिन पर चन्द्राकार रूप में लटकती पुष्प कलिकाओं, सिंह आकृतियों, द्वारपाल, नारी आकृतियों के अलंकरण मिलते हैं।

मठ-मंदिरों में प्रवेश द्वार का विशेष महत्त्व होता है जो काष्ठ और पीतल दोनों में निर्मित हैं। काशी के मठों में चौकोर खानों और पीतल के कड़ों, घंटियों, देव आकृतियों, यन्त्रों, शिवालय आदि के अलंकरण उल्लेखनीय हैं।

स्तम्भ- मठ-मंदिर स्थापत्य में स्तम्भों का विशेष स्थान है जिनका प्रयोग प्रमुख रूप से मठ से सम्बन्धित मंदिरों के सम्मुख भाग के मण्डपों में तथा संन्यासियों के कक्षों के सम्मुख दालानों में हुआ है। मठों में स्तम्भ के

कई प्रकार चौकोर, गोल एवं पहलदार दिखाई देते हैं जिन पर पाषाण उकेरन के सुन्दर नमूने मिलते हैं। पाषाण के साथ काष्ठ के भी स्तम्भ उपलब्ध हैं। सामान्यतः स्तम्भों के शीर्ष भाग में दोनों ओर अलंकृत घुड़ियों (ब्रैकेट) का प्रयोग हुआ है। कुमारस्वामी मठ के स्तम्भों में घुड़ियों के रूप में सुन्दर चलायमान गज आकृतियाँ अपनी सूंड़ से पुष्प तोड़ते दर्शायी गयी हैं। अलंकरण की दृष्टि से ठाकुर जितेन्द्र नाथ मठ के बृहस्पतेश्वर मंदिर के स्तम्भ सर्वाधिक सुन्दर उदाहरण हैं। शिवाला मठ के दुःखहरेश्वर महादेव मंदिर के स्तम्भ भी उल्लेखनीय हैं जिनके ऊपर से नीचे तक घट, पल्लव, अलंकृत बेल बूटों, शृंखला से लटकती घण्टियों आदि का अलंकरण है। शीतल दास अखाड़े और अन्नपूर्णा मठ-मंदिर में घण्टा लटकाने के लिये प्रयुक्त स्तम्भों के अलंकरण विशेष हैं।

वेदिका (रेलिंग)– काशी के पुराने भवनों में पाषाण अलंकरण युक्त सुन्दर वेदिकायें देखने को मिलती हैं। इन वेदिकाओं को जालीदार, अलंकृत नमूनों वाला कटावदार तथा ऊकेर कर बनाया गया है। वेदिका का प्रयोग प्रथम तल के आँगन के ऊपर बने बारजे, सीढ़ी के दोनों किनारों, छत के मुंडेर के रूप में किया गया है। इनके अतिरिक्त खुली हुई खिड़कियों में भी इनका प्रयोग हुआ है। वेदिकाओं को पुष्पाकार, सितारे के आकार, कलश आकार तथा अन्य नमूनों से अलंकृत किया गया है। कुछ उदाहरण बनारसी साड़ी के नमूनों से बहुत समानता रखते हैं। कटावदार अलंकरण की दृष्टि से ठाकुर जितेन्द्रनाथ मठ का बृहस्पतेश्वर मंदिर एवं राजराजेश्वरी मठ की वेदिका उल्लेखनीय है।

घुड़िया (ब्रैकेट)– मठों में घुड़ियों का विशेष स्थान है। ये घुड़िया ब्रैकेट के रूप में बारजे और छज्जों का भार उठाने के साथ ही भवन के सौन्दर्य में भी वृद्धि करती हैं। घुड़ियों की दृष्टि से आपारनाथ मठ, बारजा मठ, गोरखटीला मठ, कुमारस्वामी मठ विशेष हैं।

मठों में एक महत्त्वपूर्ण भाग 'बारजा' है। बारजा मठ इस दृष्टि से उल्लेखनीय है जिससे मुगल सम्राट औरंगजेब से जुड़ी लोकोक्ति प्रचलित है। बारजे का प्रयोग महन्त अपने शिष्य एवं भक्तों को दर्शन देने के लिये करते थे।

भित्तिचित्र

मठ के मंदिर की भित्तियों पर पाषाण उकेरन के साथ-साथ भित्ति चित्रों के अलंकरण भी प्राप्त होते हैं। भित्ति अलंकरण की दृष्टि से ठाकुर जितेन्द्रनाथ मठ का बृहस्पतेश्वर मंदिर और शिवाला मठ का दुःखहरेश्वर महादेव मंदिर उल्लेखनीय हैं। अखाड़ों एवं मठों में प्राप्त चित्र 18वीं, से 20वीं शती की काशी के भित्ति चित्रकला के सुन्दर उदाहरण हैं। इनमें शीतल दास के अखाड़े के मंदिर के मण्डप में बने चित्र विशेष हैं जिनमें *महाभारत* और *रामायण* से सम्बन्धित चित्रों में कौरव और पाण्डवों के चौपड़ खेलने, राम-रावण युद्ध, रामराज्याभिषेक के दृश्य प्रमुख हैं। शीतलदास अखाड़े के मुख्य मंदिर के छत पर बने चित्र के मध्य पुष्प और पत्तियों के सुन्दर अलंकरण के चारों ओर चार सुन्दर मयूर आकृतियाँ भित्ति चित्रकला की सुन्दर उदाहरण हैं।

तिलभाण्डेश्वर मठ-मन्दिर में पुष्प-पत्तियों वाली सुन्दर कल्पलता के साथ चारों ओर आठ सुन्दर मयूर आकृतियाँ एक दूसरे को देखते हुई चित्रित की गयी हैं। गोरखटीला मठ में भी मण्डप की छत पर गेरु के ऊपर सफेद रंग से चित्रित कर मयूर और पुष्प आदि बनाये गये हैं।

काँच पर बनाये गये चित्रों की दृष्टि से उदासीन पंचायती बड़ा अखाड़ा के भगवान श्रीचन्द्र के मंदिर में टंगे चित्र महत्त्वपूर्ण हैं। इनमें देवी-देवताओ के साथ उदासीन सन्तों की आकृतियाँ भी बनी हैं। उदासीन सन्तों के साथ बने गुरुनानक और गोविन्दसिंह के चित्र उल्लेखनीय हैं।

ठाकुर जितेन्द्रनाथ मठ के बंगाल शैली के बृहस्पतेश्वर महादेव मंदिर पर सफेद संगमरमर के ऊपर रंगीन पत्थरों को जड़कर पुष्प-पत्तियों वाली सुन्दर बेल का अंकन है। मंदिर के प्रवेशद्वार के दोनों पार्श्वों में रंगीन पत्थरों से बनी बेल के मध्य एक ओर संस्कृत में दूसरी ओर बंगला में शिव स्तोत्र का अंकन है।

मूर्तियाँ

काशी में शैव धर्म की प्रधानता होते हुए भी अन्य धर्मों को पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त थी। इस धार्मिक स्वतन्त्रता ने सभी सम्प्रदायों के अनुयायियों को अपने इष्ट देवों की मूर्तियों का निर्माण करने का अवसर दिया। परिणामस्वरूप शिव, विष्णु, सूर्य, ब्रह्मा, पार्वती, लक्ष्मी, सरस्वती तथा मातृका आदि की मूर्तियों का निर्माण हुआ। काशी के विभन्न मठ-मन्दिरों से गुप्त काल से लेकर 18वीं-19वीं शती तक की देव आकृतियों के उदाहरण प्राप्त होते हैं। मूर्तिकला की दृष्टि से सर्वप्राचीन गुप्तकालीन मूर्ति तिलभाण्डेश्वर मठ मंदिर की शिव की दक्षिणामूर्ति है जहाँ शिव को शास्त्र व्याख्याता के रूप में दिखाया गया है। आरम्भ से ही मठ शिक्षा के केन्द्र माने गये हैं। फलस्वरूप मठों में दो स्वरूपों की मूर्तियाँ अधिक मिलती हैं। एक शिव की दक्षिणामूर्ति दूसरी दत्तात्रेय (ज्ञानावतार)। इन स्वरूपों के आधार पर मठों के नाम भी रखे गये जैसे दक्षिणामूर्ति मठ, दत्तात्रेय मठ आदि।

शैव मठों में गणेश के विभिन्न स्वरूपों वाली मूर्तियों के साथ छोटे से लेकर विशाल शिवलिंगों के उदाहरण भी प्राप्त होते हैं। तिलभाण्डेश्वर मठ-मंदिर, जागेश्वर मठ, तैलंगस्वामी मठ के शिवलिंग विशेष हैं। लोक मान्यतानुसार तिलभाण्डेश्वर मठ का शिवलिंग प्रतिदिन तिल-तिल बढ़ता बताया गया है। चौसट्टी मठ में स्थापित शिवलिंग के साथ पार्वती आकृति भी देखने को मिलती है। इस प्रकार यहाँ शिवलिंग के माध्यम से शिव और पार्वती दोनों की प्रस्तुति हुई है।

शैव मठों में शिवलिंग के साथ-साथ नन्दी की भी प्रधानता मिलती है जिसके लिये प्रायः एक स्वतन्त्र मण्डप होता है। नन्दी की ये आकृतियाँ पाषाण अलंकरण के अद्वितीय उदाहरण हैं जैसा कि उनके आभूषण तथा पीठ को आच्छादित करने वाले वस्त्र से स्पष्ट होता है। अलंकृत नन्दी का सुन्दर उदाहरण दक्षिणामूर्ति मठ का नन्दी है।

वैष्णव मठों के मंदिरो में नृसिंह, विष्णु, राम-सीता, लक्ष्मण, हनुमान, बलभद्र, जगन्नाथ और कृष्ण की मूर्तियाँ देखने को मिलती हैं। वैष्णव अखाड़ों में शीतलदास के अखाड़े के मंदिर में कृष्ण की बालस्वरूप की छोटी मूर्ति सुरक्षित है। यहाँ कृष्ण पैर के अँगूठे को चूसते बाल कृष्ण रूप में दिखाये गये हैं।

मठों में आदित्य स्वरूप में सूर्य का भी अंकन मिलता है जिसमें वृत्त के मध्य में सूर्य मुखाकृति बनी होती है। इसका उदाहरण पातालपुरी मठ (वैष्णव) एवं 17वीं शती का अपारनाथ मठ है।

काशी के मठ शैव और वैष्णव सम्प्रदाय के समन्वय के परिचायक भी रहे हैं। इसका एक सुन्दर उदाहरण तैलंगस्वामी मठ के मंदिर में सन् 1583 की सन्त एकनाथ द्वारा स्थापित साक्षी गोपाल की मूर्ति है। प्रस्तुत मूर्ति में कृष्ण के मस्तक पर शिवलिंग स्थित दिखाया गया है। दत्तात्रेय मूर्ति का भी मठों में विशेष स्थान रहा है जिन्हें कामधेनु के साथ त्रिमुखी रूप (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) में प्रस्तुतकिया गया है। काशी पंचोपासना का प्रमुख केन्द्र रही है। यहाँ 19वीं-20वीं शती के अधिकांश मंदिर पंचायतन हैं। गर्भगृह में स्थापित शिवलिंग के अतिरिक्त शक्ति, गणेश, विष्णु और सूर्य को गर्भगृह के चार कोनों पर पर स्थापित कर पंचायतन का भाव दर्शाया गया है। मठों में भी इनके उदाहरण देखने को मिलते हैं।

प्रायः सभी मठों में उनके प्रतिष्ठापकों की मूर्तियाँ भी प्राप्त होती हैं जिनमें शंकराचार्य की मूर्तियाँ प्रमुख

हैं। ये मूर्तियाँ संगमरमर तथा पंचधातु दोनों की हैं। संगमरमर में निर्मित शंकराचार्य की मूर्तियाँ बोधगया तथा कैलाश मठ में देखी जा सकती हैं। उदासीन पंचायती अखाड़े में उदासीन सम्प्रदाय के संस्थापक भगवान श्रीचन्द्र, गोरखटीला मठ में गुरु गोरखनाथ, महानिर्वाणी अखाड़े में कपिल मुनि, कुमारस्वामी मठ में कुमारस्वामी, बिजुलियावीर मठ में बिजुलियाबीर बाबा एवं मछलीबंदर मठ में श्रीकृष्णाश्रम की मूर्तियाँ स्थापित हैं।

कुछ मठों में पाषाण मूर्तियों के अतिरिक्त धातु मूर्तियाँ भी प्राप्त होती हैं जो दक्षिण भारतीय शैली के सुन्दर उदाहरण हैं। कुमारस्वामी मठ के सोक्कनागड़ मंदिर के गर्भगृह में स्थापित पंचधातु निर्मित भैरव की प्रतिमा विशेष उल्लेखनीय है। प्रस्तुत मूर्ति में मुण्डमाला, सर्प तथा हाथों में खड्ग और मुण्ड लिये शिव के भैरव स्वरूप को प्रस्तुत किया गया है। भैरव के मस्तक के ऊपर सर्पाकृति और पार्श्व में दौड़ने की मुद्रा में श्वान की आकृति बनी है। तिलभाण्डेश्वर मठ मंदिर के शंकराचार्य, काशी मठ संस्थान के विष्णु भी धातु मूर्ति के उदाहरण हैं। स्वर्ण एवं रजत प्रतिमायें भी मठों में मिलती हैं। इस सन्दर्भ में अन्नपूर्णा मठ मंदिर की स्वर्ण अन्नपूर्णा और लक्ष्मी एवं सरस्वती की प्रतिमा विशेष उल्लेखनीय है। इस प्रतिमा का दर्शन वर्ष में केवल धनतेरस से अन्नकूट तक ही होता है। इन प्रतिमाओं के समक्ष रजत के पूजा पात्र काशी के धातु (नक्काशी) कला के उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। अन्नपूर्णा मंदिर का स्वर्ण निर्मित श्रीयन्त्र भी उल्लेखनीय है।

मठों में समाधियों का भी विशेष स्थान होता है जिसके लिये विशेष स्थल बना होता है। ये समाधियाँ मठ के संस्थापक एवं महंतों की होती है। शैव मठों में समाधियों के ऊपर सामान्यतः शिवलिंग स्थापित होते हैं। समाधियों पर चरण पादुका की स्थापना मिलती है। कुछ समाधियों के ऊपर संस्थापकों की मूर्तियाँ भी बनी हैं। गोरखटीला मठ में समाधि के ऊपर गोरखनाथ एवं महानिर्वाणी अखाड़े में समाधि पर कपिल मुनि की मूर्तियाँ प्रतिष्ठित हैं। समाधियों के लिये जंगमबाड़ी मठ, टेकरामठ, आपारनाथमठ और बारजामठ उल्लेखनीय हैं।

काशी के मठ तन्त्र साधना के स्थल के रूप में भी जाने जाते हैं। ऐसे मठों में राजराजेश्वरी मठ, काली मठ, सुमेरु मठ विशेष हैं। कामरूप मठ, मछलीबन्दर मठ, काली मठ में हस्तलिखित दुर्लभ तन्त्र पाण्डुलिपियाँ थीं जो वर्तमान में अप्राप्य हैं। दत्तात्रेय मठ, सुमेरु मठ, रामतारक मठ वेद और उपनिषद् के लिये प्रसिद्ध थे।

इस प्रकार मठ केवल साधु-संन्यासियों के निवास स्थल ही नहीं वरन् तत्कालीन कला के विविध पक्षों के सुन्दर उदाहरण भी प्रस्तुत करते हैं। मठों एवं अखाड़ों की समृद्धि का पता विशेष आयोजनों में प्रयुक्त स्वर्ण और रजत की विभिन्न वस्तुओं जैसे– पूजा पात्र, सिंहासन, हौदा, चँवर, छत्र, अस्त्र-शस्त्र और गज, अश्व और रथ सज्जा से सम्बन्धित सामग्रियों से चलता है। हाल में सम्पन्न हुआ अर्द्धकुम्भ इसका स्पष्ट उदाहरण है। सांस्कृतिक और धार्मिक दृष्टि से ये मठ एक केन्द्र का कार्य करते हैं, जहाँ विभिन्न संस्कृतियों का समागम होता है। वर्तमान में काशी के कुछ मठ विलुप्त होती संस्कृति के पठन-पाठन का भी कार्य करते रहे हैं।

संदर्भ

1. वामन शिवराम आप्टे, *संस्कृत-हिन्दी कोश,* दिल्ली प्रथम संस्करण, 1966।
2. त्रिवेणीदत्त त्रिपाठी, *हिन्दू मठ,* वाराणसी, 1988, पृ. 23।

•